हिंदी विभाग

जवाहरलाल नेहरु राजकीय महाविद्यालय हरिपुर, मनाली, जिला कुल्लू (हिमाचल प्रदेश)

विभाग का नाम : **हिंदी**
स्थापना वर्ष : **2006**
पाठ्यक्रम प्रकार : **स्नात्तक के तहत**
स्वीकृत पद : **01**
भरे हुए पदों की संख्या : **01**
कार्यक्रम कोर्स
स्नातक (कला, विज्ञान और वाणिज्य)

कोर्स

मुख्य पाठ्यक्रम : **मेजर/माइनर**
कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम
कोर कोर्स : **अनिवार्य हिंदी**
क्षमतावृद्धि अनिवार्य कोर्स

सामान्य ऐच्छिक : जेनेरिक इलेक्टिव

क्रम संख्या	नाम	शैक्षणिक योग्यता	पद	अनुभव
01.	डॉ. उरसेम लता सह–प्राध्यापक	बीए हिंदी ऑनर्स (स्वर्ण पदक), एमए, एम.फिल, पीएचडी, स्नातक–पत्रकारिता एवं जन–संचार, सर्टिफिकेट कोर्स जर्मन	सह–प्राध्यापक	23 वर्ष

स्नात्तक हिंदी विषय की प्रस्तावित रूपरेखा

प्रथम वर्ष

वर्ष	पाठ्यक्रम	कोड	पाठ्यक्रम शीर्षक	क्रेडिट
प्रथम वर्ष	कोर कोर्स	HINDI-101	अनिवार्य हिंदी प्रयोजमूलक हिंदी	06
प्रथम वर्ष	DSC1-A	HINDI-102	हिंदी साहित्य का इतिहास	06
प्रथम वर्ष	DSC1-B	HINDI-103	मध्यकालीन हिंदी कविता	06
प्रथम वर्ष	AECC-2	HINDI-104	हिंदी भाषा और सम्प्रेषण	04

द्वितीय वर्ष

वर्ष	पाठ्यक्रम	कोड	पाठ्यक्रम शीर्षक	क्रेडिट
द्वितीय वर्ष	कोर कोर्स	HINDI-201	अनिवार्य हिंदी–रचनापुंज	06
द्वितीय वर्ष	कोर कोर्स DSC1-C	HINDI-202	आधुनिक हिंदी	06
द्वितीय वर्ष	कोर कोर्स DSC1-D	HINDI-203	हिंदी गद्य साहित्य	06
द्वितीय वर्ष	कौशल संवर्धन विकास-1	HINDI-204	कार्यालयी हिंदी	04
द्वितीय वर्ष	कौशल संवर्धन विकास-2	HINDI-206	अनुवाद विज्ञान	04

तृतीय वर्ष

वर्ष	पाठ्यक्रम	कोड	पाठ्यक्रम शीर्षक	क्रेडिट
तृतीय वर्ष	कोर कोर्स	HINDI-305	लोक–साहित्य	06
तृतीय वर्ष	कोर कोर्स DSC-1	HINDI-306	छायावादोत्तर हिंदी कविता	06
तृतीय वर्ष	कौशल संवर्धन विकास-3	HINDI-301	रंग आलेख एवं रंगमंच	04
तृतीय वर्ष	कौशल संवर्धन विकास-4	HINDI-304	समाचार संकलन और लेखन	04
तृतीय वर्ष	सामान्य वैकल्पिक पाठ्यक्रम	HINDI-307	आधुनिक भारतीय साहित्य	06
तृतीय वर्ष	सामान्य वैकल्पिक पाठ्यक्रम	HINDI-308	सर्जनात्मक लेखन के विविध क्षेत्र	06

स्नातक प्रथम वर्ष

प्रयोजनमूलक हिंदी HIND- 101

अनिवार्य हिंदी – (प्रयोजनमूलक हिंदी)

लक्ष्य – प्रयोजनमूलक हिंदी विषय अपने आप में गूढ़ विषय है, जिसमें प्रारूपण, प्रतिवेदन, टिप्पणी, मीडियालेखन, पत्र–लेखन, अनुवाद, शब्द–शोधन, कंप्यूटर, मुहावरे और लोकोक्तियां आदि विषयों का समावेश किया गया है। इस

पाठ्यक्रम का लक्ष्य है कि कंप्यूटर युग में विद्यार्थियों को व्यावहारिकता में हिंदी भाषा का ज्ञान हो, व्याकरण की दृष्टि से विद्यार्थियों को भविष्य में भाषा से संबंधित कोई कठिनाई न हो। सामान्यतः विद्यार्थियों को मौलिक, रचनात्मक एवं सृजनात्मक लेखन का अवसर कम मिलता है।

प्रतिफल : प्रयोजनमूलक हिंदी पाठ्यक्रम का लक्ष्य उच्च शिक्षा में विद्यार्थियों को एक बार स्कूल शिक्षा के दौरान प्राप्त किए गए ज्ञान को स्मरण कराना ताकि प्रारूपण, प्रतिवेदन, टिप्पणी, सम्पादकीय लेखन जैसे विषयों में कुशलता प्राप्त हो सकें।

मध्यकालीन हिंदी कविता – कोड HIND-103

इकाई–1

1. कबीर और सूरदास का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं काव्यगत विशेषताएं

इकाई–2

1. तुलसीदास तथा मीराबाई का व्यक्तित्व एवं काव्यगत विशेषताएं

तुलसीदास – बालकांड

उत्तरकांड 96, 106 पद

विनय पत्रिका– पद संख्या 105, 111, 162

मीराबाई के पद – 5, 17, 18, 19, 22, 23, 25, 41, 73, 158

इकाई–3 – रसखान तथा बिहारी का व्यक्तित्व

कृतित्व : सामान्य परिचय एवं काव्यगत विशेषताएं

रसखान के पद संख्या – 1, 2, 3, 4, 5, 6, 7

बिहारी के दोहे – 2, 15, 20, 25, 38, 46, 69, 70, 110, 123

इकाई–4

1. भूषण एवं घनानंद का व्यक्तित्व, कृतित्व एवं काव्यगत विशेषताएं

भूषण के 2 से 9 तक दोहे और घनानंद के पद 1 से 8 तक

लक्ष्य :– उपरोक्त पाठ्यक्रम हिंदी साहित्य के विद्यार्थियों को मध्यकालीन कवियों के द्वारा लिखी गई रचनाओं को समझने का अवसर देती हैं। ये साहित्य शाश्वत होने के साथ–साथ लोकहित की सिद्धी के कारण प्रासंगिक है। कबीर, सूरदास, तुलसीदास, मीरा, रख्सखान, बिहारी, भूषण, घनानंद भक्तिकाल एवं रीतिकालीन महात्माओं द्वारा सृजित एक ऐसा साहित्य है, जो नैतिक एवं उच्च आदर्शों एवं मानव मूल्यों से ओत–प्रोत है। हालांकि भक्तिकालीन साहित्य अपनी जनपक्षधरता के कारण इन्हीं कवियों के होने से स्वर्ण–युग भी माना जाता है।

लोक–नायक तुलसीदास हो या सूरदास इन सभी ने ज्ञान और कर्म के समन्वय के द्वारा तथा निष्काम कर्म के उपदेश के द्वारा स्वार्थ और परार्थ के द्वंद्व को समाप्त किया। मीराबाई की पदावली में तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति, मीरा का सामंती एवं पितृस्तात्मक व्यवस्था के प्रति विद्रोह के स्वर के साथ नारी चेतना पर विस्तारपूर्वक चित्रण हुआ है। रीतिमुक्त काव्यधारा के कवि घनानंद में काव्य में एक निष्ठ प्रेम का चित्रण हिंदी साहित्य की चिरस्थायी सम्पति है।

प्रतिफल : इस पाठ्यक्रम से विद्यार्थी जानने में सक्षम होगा कि इतिहास का वह दौर कैसा था। आज कंप्यूटर युग में विद्यार्थी उस दौर को वर्तमान संदर्भ में कैसे देखता है। संत कबीरदास के विचारों को पढ़कर विश्वास नहीं होता कि एक अनपढ़ व्यक्ति अपने समय की सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध इतने प्रबल तर्क उस राजनीतिक व्यवस्था में कैसे दे पाया होगा। जबकि आज भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में शिक्षित वर्ग भी ऐसे तर्कों के प्रति निरपेक्ष दिखाई देता है।

उपरोक्त पाठ्यक्रम की बेहतर समझ बनाने की दृष्टि से विद्यार्थियों में नैतिकता बनाए रखने के लिए तथा सामाजिक विषमताओं को दूर करने की रुचि पैदा होगी। मध्यकालीन साहित्य के माध्यम से परिवेश के प्रति संवेदनात्मक दृष्टि पैदा करने की ओर प्रवृत्त होंगे।

हिंदी साहित्य का इतिहास HIND-102

इकाई–1

काल विभाजन एवं नामकरण, सिद्ध, नाथ एवं जैन साहित्य

आदिकाल की विशेषताएं, प्रमुख रासोकाव्य

इकाई–2 – भक्ति आन्दोलन, सामाजिक–सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

प्रमुख निर्गुण कवि, सुगम कवि, भक्ति काल की सामान्य विशेषताएं

इकाई–3 रीतिकाल की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, रीतिवद्ध, रीति सिद्ध तथा रीतिमुक्त कवि

इकाई–4 : 1857 का स्वतंत्रता संघर्ष और हिंदी नव–जागरण, भारतेंदु युगीन साहित्य की विशेषताएं

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उन का युग

मैथिली शरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्य धारा

छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयागवाद और नई कविता एवं हिंदी में गद्य विद्याओं का उद्‌भव और विकास–

उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध।

लक्ष्य : हिंदी साहित्य के इतिहास पर दृष्टिपात करें तो ज्ञात होगा है कि आरम्भ में गार्सां–द–तासी, शिवसिंह सेंगर, डॉ. ग्रियर्सन, मिश्र बंधुओं आदि ने सामग्री संकलन का कार्य किया तथा आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने उनकी विभिन्न प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया। आज हिंदी साहित्य के इतिहास का नामकरण, काल विभाजन एवं प्रवृतियां प्रचलित हैं, उसमें आचार्य रामचंद्र शुक्ल का सराहनीय योगदान है।

प्रतिफल : शताधिक विद्वानों ने हिंदी साहित्य के क्षेत्र में जो अनुसंधान कार्य किया है, उस के साहित्य के विद्यार्थी लाभान्वित होंगे। निश्चिय ही भविष्य में हिंदी साहित्य का इतिहास उपरोक्त पाठ्यक्रम से बहुत सी नई सामग्री प्रकाश में आई है, इससे निश्चिय ही साहित्य के विद्यार्थी ज्ञान पाने की लालसा में अतिरिक्त परिश्रम करना पड़े तो निरर्थक नहीं होगा।

अनिवार्य हिंदी HIND-201

रचना पुंज बी.ए./बीकॉम द्वितीय वर्ष

इकाई–1 :– कबीर, घनानंद, सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला तथा बाल कृष्ण शर्मा नवीन

कबीर– 15 दोहे घनान्द–तीन कवित्त, तीन सवैये

सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– तोड़ती पत्थर, विनय

बालकृष्ण शर्मा नवीन – विप्लव गायन

इकाई–2 अज्ञेय– कितनी नावों में कितनी बार, दूर्वाचल

मुक्तिबोध : मुझे तुम्हारा साथ मिला, ओ मेघ

धूमिल – दस्तक, रोटी और संसद

इकाई–3 : प्रेमचंद, मोहन राकेश, काशीनाथ सिंह

ईदगाह, मलबे का मालिक, अपना रास्ता लो बाबा

उदय प्रकाश– छप्पन तोले का करधन

इकाई–4 महादेवी वर्मा– जीने की कला

रामधारी सिंह दिनकर– नेता नहीं नागरिक चाहिए

श्री लाल शुक्ल – अंगद का पांव

लक्ष्य – उपरोक्त पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अनिवार्य रूप से अध्ययन करना है। इसलिए जो विद्यार्थी दसवीं कक्षा के बाद हिंदी साहित्य की विभिन्न विधाओं से वंचित हो जाते हैं, वह विद्यार्थी पुनः कविता, कहानी, निबंध के माध्यम से पठन–पाठन में रुचि विकसित कर सकते हैं।

प्रतिफल और परियोजना का समन्वय – इस पाठ्यक्रम के तहत छात्रों के पास एक अवसर होता है कि वे कहानी, कविता व निबंध लेखन के क्षेत्र में भी रचना–कर्म कर सकते हैं और अनिवार्य विषय गैर–साहित्यिक विद्यार्थियों के लिए रूचिकर हो सकता है तथा पठन–पाठन एवं लेखन के क्षेत्र में अपनी प्रतिभा को तराश सकते हैं। इस पाठ्यक्रम

में गद्य–पद्य दोनों तरह की रचनाओं को पढ़ने का अवसर प्राप्त होता है ताकि विद्यार्थी अपनी रूचि का विषय का चयन कर सकें तथा कहानियों और निबंधों का अध्ययन कर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में मूल्यांकन कर अपने–अपने अनुभवों को समानुदेशन में अभिव्यक्त कर सकने में सक्षम हो सकते हैं।

इस प्रकार उपरोक्त पाठ्यक्रम अपने लक्ष्य को पूरा कर सकता है।

हिंदी गद्य साहित्य HIND- 203

इकाई 1– जैनेन्द्र कुमार : व्यक्तित्व एवं कृतित्व
उपन्यास – त्यागपत्र : तात्विक समीक्षा
इकाई 2– प्रेमचंद – नमक का दरोगा
जयशंकर प्रसाद– आकाश दीप
यशपाल– पर्दा। उषा प्रियंवदा– वापसी
इकाई 3– रामचंद्र शुक्ल तथा आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
लोभ और प्रति – रामचंद्र शुक्ल
उपरोक्त निबंधों की तात्विक समीक्षा
इकाई 4 – संस्कृति और समीक्षा – महादेवी वर्मा
भूमण्डलीकरण, धार्मिक समाज और पूंजीवाद–प्रभाखेतान
उपर्युक्त निबंधों की तात्विक समीक्षा
लक्ष्य– उपन्यास मानवजीवन का सच्चा दस्तावेज है। 'त्याग पत्र' उपन्यास की लोकप्रियता के कारण इसे पाठ्यक्रम में स्थान दिया है। अन्य उपन्यासकारों की अपेक्षा लेखक ने दार्शनिकता को प्रधानता दी है और मृणाल पात्र के माध्यम से नारी शोषण की समस्या के साथ मृणाल के जीवन संबंधी अपने मूल्य को पुष्ट किया है।
प्रतिफल / परियोजना का समन्वय – उपन्यास व कहानी के माध्यम से विद्यार्थियों को समस्याओं से अवगत कराना तथा आधुनिक परिप्रेक्ष्य में विद्यार्थियों को जागरुक कराना। इसके अतिरिक्त निबंधों के माध्यम से विविध विषयों की जानकारी उपलब्ध करना ताकि सभी विद्यार्थी समानुदेशन के द्वारा अपने विचार आज के परिप्रेक्ष्य में अभिव्यक्त कर सकें।

आधुनिक हिंदी कविता HIND-202

इकाई 1– भारतेन्दु हरिश्चंद्र और अयोध्या सिंह उपाध्याय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : समान्य परिचय
भारतेन्दु हरिश्चंद्र – भारत दुर्दशा, वर्षा विनोद, प्रेम मालिका, प्रेमाश्रु वर्षण
अयोध्या सिंह उपाध्याय – प्रिय प्रवास, दुःखिया के आंसू, एक बूंद, कांटा और फूल
इकाई 2– मैथिली शरण गुप्त तथा जयशंकर प्रसाद का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
मैथिली शरण गुप्त – भारत–भारती, मातृभूमि, आशा, सन्देश
जयशंकर प्रसाद – ले चल मुझे भूलावा देकर, बीती विभावरी जागरी
अरुण यह मधुमय देश हमारा, हृदय का सौंदर्य
इकाई 3– सूर्यकांत त्रिपाठी निराला तथा सच्चिदानंद हीरानंद वात्सायायन अज्ञेय का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय
सूर्यकांत त्रिपाठी निराला– वर दे वीणा वादिनी वर दे, तोड़ती पत्थर, स्नेह–निर्झर बह गया है, विधवा
अज्ञेय – उ़ल चल हारिल, कलगी बाजरे की, सांप, नया कवि : आत्म स्वीकार
इकाई 4– नागार्जुन तथा नरेश मेहता का व्यक्तित्व एवं कृतित्व
नागार्जुन–यह दंतुरित मुस्कान, प्रेत का बयान
नरेश मेहता– तीर्थजल, पीले फूल कनेर के, मेघ मैं
लक्ष्य– उपरोक्त पाठ्यक्रम का लक्ष्य विद्यार्थियों को आधुनिक हिंदी कविता की जानकारी देना तथा कविता के माध्यम

से देश की सांस्कृतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि से अवगत कराना है। इस पाठ्यक्रम में उन कविताओं को स्थान दिया गया है जो आधुनिक युग की प्रवृतियों एवं समकालीन बोध को अभिव्यक्त करने में सक्षम हैं। समय के अनुसार परिवर्तनशील मूल्य बह जाते हैं, लेकिन शाश्वत मूल्य अस्तित्व बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

प्रतिफल व परियोजना का समन्वय – विद्यार्थियों को संबंधित कवियों की कविताओं का अध्ययन कर समानुदेशन तैयार करने को कहा जा सकता है, क्योंकि समय के अनुसार विचारधारा में परिवर्तन होता रहता है। कविता का सम्बन्ध हृदय की अनुभूतियों से है इसलिए कविता शाश्वत व कालजयी है।

संवर्धन कौशल पाठ्यक्रम S.E.C.

कार्यालयी हिंदी HIND-204

इकाई 1– हिंदी भाषा के विभिन्न रूप– राष्ट्रभाषा, राजभाषा, जनभाषा, माध्यम भाषा, संचार भाषा, सृजनात्मक भाषा, यांत्रिक भाषा।

इकाई 2– राजभाषा का स्वरूप, भारतीय संविधान में राजभाषा सम्बन्धी परिनियमावली का सामान्य परिचय, राजभाषा के रूप में हिंदी के समक्ष व्यावहारिक कठिनाइयां एवं समाधान

इकाई 3 – टिप्पण, प्रारूपण, पल्लवन, संक्षेपण।

विभिन्न प्रकार के पत्राचार प्रशासनिक पत्राबली की निष्पादन प्रक्रिया

इकाई 4– परिभाषिक शब्दावली, कार्यालय हिंदी के विभिन्न यांत्रिक उपकरणों का अनुप्रयोग– कंप्यूटर लैपटॉप, टैबलेट, टेलीप्रिंटर, टेलेक्स, वीडियो कान्फ्रेंसिंग

लक्ष्य– आधुनिक भारतीय भाषाओं में हिंदी भाषा सर्वाधिक व्यक्तियों द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा है। यह भारत की राष्ट्रीयता की नहीं अपितु अस्मिता की भी परिचायक है। आज देश–विदेश में हिंदी भाषा सृजनात्मक संचार, जन–भाषा, सम्पर्क भाषा आदि के रूप में नये कीर्तिमान स्थापित कर रही है। टीवी, कंप्यूटर मीडिया की हिंदी धीरे–धीरे आप पहचान बनती जा रही है। प्रशासन की भाषा होने के कारण सरकारी दृष्टि से इस भाषा का महत्त्व बढ़ता जा रहा है।

प्रतिफल एवं परियोजना का समन्वय : केंद्र सरकार की नई शिक्षा नीति के अन्तर्गत हिंदी भाषा के इस भविष्य में शिक्षण–प्रशिक्षण और पठन–पाठन की व्यवस्था से नई पीढ़ी निश्चित रूप से लाभान्वित हो सकती है। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को हिंदी भाषा के अध्ययन से सरकारी कार्यालयों से सम्बंधित प्रारूपण, प्रतिवेदन, टिप्पण आदि कार्यों का प्रारूप तैयार करके प्रतियोगी परीक्षाओं में कार्यालयी हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा सकता है। दैनिक व्यवहार, प्रशासन व्यवहार, चिकित्सा आदि क्षेत्रों में हिंदी का ज्ञान सभी विद्यार्थियों के लिए प्रासंगिक होगा।

संवर्धन कौशल पाठ्यक्रम S.E.C.

अनुवाद विज्ञान HIND-206

इकाई 1– अनुवाद का तात्पर्य, अनुवाद का प्रकार–

भाषांतरण, अनुवाद तथा रूपांतरण में साम्य–वैषम्य, अनुवाद के प्रकार कार्यालयी, साहित्यिक, ज्ञान–विज्ञानपरक, वाणिज्यिक

इकाई 2– साहित्यिक अनुवाद के प्रमुख रूप–काव्यानुवाद, कथानुवाद, नाट्यानुवाद

इकाई 3– वैज्ञनिक तकनीकी शब्दावली का अनुवाद, महावरे, लोकोतियों का अनुवाद

अनुवाद की संपादन प्रविधि, अनुवादके की अर्हता

सफल अनुवाद के लक्षण

इकाई 4– विश्व भाषाओं की प्रमुख कृतियों के हिंदी अनुवाद एवं हिंदी की प्रमुख कृतियों के विश्व भाषाओं के किए गए अनुवाद भारत के अनुवाद प्रशिक्षण के प्रमुख केंद्र, अनुवाद के राष्ट्रीय प्राधिकरण के गठन की आवश्यकता हिंदी अनुवाद का भविष्य

लक्ष्य – आधुनिक तकनीकी युग में विद्यार्थियों के लिए अनुवाद का महत्त्व दिन–प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। देश–विदेश

में होने वाले अनुसंधान, व्यवसाय के क्षेत्र में एक वस्तु का विज्ञापन विभिन्न भाषाओं में करना, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान तथा तकनीकी, राजनीतिक एवं कूटनीतिक, विभिन्न देशों के शिष्टमण्डलों का विश्व की समस्याओं पर चिन्तन, संस्कृति के विभिन्न पहलुओं का अनुवाद के साथ, व्यापक सम्बन्ध है।

प्रतिफल एवं परियोजना का समन्वय : अनुवाद के क्षेत्र में काम, रोजगार की अपार सम्भावनाएं हैं। आज हिंदी अनुवादकों के पद पर असंख्य लोग आजीविका कमा रहे हैं। अनुवाददाता के बिना संसर के किसी भी भाषा की संस्कृति, धर्म–दर्शन, सभ्यता आचार–विचार से परिचित होना संभव नहीं है। इसके अंतर्गत विद्यार्थियों को लोक में फैले मौखिक साहित्य को अनुवादित करने की परियोजनाओं से जोड़ा जा सकता है।

आधुनिक भारतीय साहित्य

(Ge-1) HIND-307

इकाई–1 स्वाधीनता संग्राम और भारतीय नवजागरण तथा उस का भारतीय साहित्य पर प्रभाव
भारतीय साहित्य और राष्ट्रीयता

इकाई 2– महात्मा गांधी और महर्षि अरविंद का भारतीय साहित्य पर प्रभाव
मार्क्सवाद एवं अस्तित्ववाद का भारतीय साहित्य पर प्रभाव

इकाई 3– अनंतमूर्ति : संस्कार उपन्यास
रविन्द्र नाथ टैगोर : गीतांजली, 1.वंदना, 2. परिचय, 3. वरदान
4. अरुण किरण, 5. सागर में ज्वार, 6. रात्री परीक्षा, 7. शरद सुंदरी
8. आषाढ़ की संध्या, 9. दिन ढल गया, 10. प्रिय व्यथा, 11. निर्झर, 12. अखंड आशा, 13. प्रकाश पुंज 14. रक्षा बंधन

इकाई 4 – विजय तेंदुलकर : घासीराम कोतवाल

लक्ष्य : यह पाठ्यक्रम उन विद्यार्थियों के लिए निर्धारित किया गया है, जो स्नातक स्तर पर हिंदी नहीं पढ़ते। इस पाठ्यक्रम में नवजागरण, भारतीय स्वाधीनता संग्राम तथा अलग–अलग विचारधाराओं और चिंतकों केब सिद्धांतों के बारे में अपनी सोच विकसित करने में विद्यार्थियों को सहायता मिल सकती है। इससे विद्यार्थियों को अतीत के विचारों को वर्तमान की आवश्यकता के अनुसार ढाल कर अपनाने पर बल मिल सकता है।

प्रतिफल एवं परियोजना का समन्वय : संस्कार उपन्यास के आधार पर समाज व परिवेश में जो परम्पराएं या रूढ़ियां समाज को विघटित कर रही हैं उन पर आधारित विचारों को तर्कसंगत, विवेक सम्मत एवं समय के अनुरूप विद्यार्थियों को आधुनिक परिप्रेक्ष्य में रूढ़िवादी परम्पराओं से विद्रोह करने पर बल मिल सकता है। रविन्द्र नाथ टैगोर की गीतांजली के आधार पर भारतीय संस्कृति अध्यात्मवाद व विश्वबन्धुत्ववाद की भावना के संदेश का प्रसार वैश्विक परिप्रेक्ष्य में किया जा सकता है। विजय तेंदुलकर का घासीराम कोतवाल का मंचन विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है।

समाचार संकलन और लेखन

S.E.C. HIND-304

इकाई 1– समाचार अवधारणा परिभाषा, बुनियादी तत्व, समाचार और संवाद, संरचना, समाचार मूल्य, समाचार के स्त्रोत।

इकाई 2 समाचार का वर्गीकरण : खोजी व्याख्यापरक, प्रवर्तन समाचार। सम्वाददाता– भूमिका अर्हता श्रेणियां
रिपोर्टिंग के क्षेत्र और प्रकार : विधायिका, न्यायपालिका, मंत्रालय और प्रशासन, विदेश, रक्षा, राजनीति, अपराध और न्यायालय, दुर्घटना एवं नैसर्गिक आपदा, ग्रामीण, कृषि विकास अर्थ एवं वाणिज्य, बैठकें एवं सम्मेलन, संगोष्ठी, खेलकूद, पर्यावरण

इकाई 3– इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों से प्राप्त समाचारों का पुनर्लेखन
लीड– अर्थ प्रकार विशेषता, महत्त्व

इकाई 4 – शीर्षकः अर्थ, प्रकार, लिखने की कला, मास रिपोर्टिंग : कला और विज्ञान के रूप में विश्लेषण वस्तुपरकता और भाव–शैली

लक्ष्य – लोकतंत्र में पत्रकारिता की भूमिका व प्रासंगिकता से विद्यार्थियों को अवगत कराना तथा पत्रकारिता के क्षेत्र में रोजगार की संभावनाओं को लेकर विद्यार्थियों में रुचि पैदा करना। लोकतंत्र के चौथे सतम्भ को सशक्त बनाने हेतु साक्षात्कार के बारे अवगत कराना। समाचार अधिक ज्ञान और सूचना प्राप्त करने के साथ आत्मविश्वास और कुशलता के स्तर को बढ़ाने का अच्छा स्त्रोत है।

प्रतिफल एवं परियोजना का समन्वय : तकनीकी क्षेत्रों में आज कई प्रकार के सोशल मीडिया मंच उपलब्ध हैं, जहां विद्यार्थी अपने घर पर ही अपने यू–ट्यूब न्यूज़ चैनल्स के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों, राजनीतिक गतिविधियों व अन्य आवश्यक मुद्दों पर अपनी राय रखने के लिए उपरोक्त पाठ्यक्रम का व्यवहारिक इस्तेमाल कर सकते हैं। पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों को छोटी–छोटी परियोजनाओं के द्वारा पंचायत और नगर निकायों की नीतियों पर अपनी राय रखने के लिए तैयार किया जा सकता है।

SEC

रंग आलेख एवं रंगमंच

Code: HIND-309

इकाई–1 नाटक के प्रमुख प्रकार और उनका रचना विधान– एकांकी, लोकनाटक, प्रहसन, काव्य–नाटक, नुक्कड़ नाटक, प्रतीक–नाटक, भाव–नाटक, रेडियो टी.वी. नाटक

इकाई–2 हिंदी नाटक शास्त्र और नाट्य–लेखन का इतिहास

हिंदी नाटक की प्रमुख प्रवृत्तियां– समाजिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, समस्यामूलक तथा एवसर्ड नाटक

इकाई 3– हिंदी के प्रमुख नाटक और नाटककार

हिंदी रंगमंच के प्रमुख रूप– शौकीया मंच, व्यावसायिक मंच, सरकारी मंच, हिंदी क्षेत्र की प्रसिद्ध रंग शालाएं तथा संस्थाएं

इकाई 4– रंगशिल्प प्रशिक्षण, रंग स्थापत्य, रंग सज्जा, रंग दीपन, ध्वनि–व्यवस्था एवं प्रसाधन

निर्देशन एवं अभिनय, रंगमंचीय भाषा की विशेषताएं

लक्ष्य– विद्यार्थियों को रंगमंच की जानगारी प्रदान करना।

प्रतिफल एवं परियोजना का समन्वय : इस पाठ्यक्रम के माध्यम से मौखिक साहित्य के लोक–नाटकों को संकलित करने की दृष्टि से विद्यार्थियों में रिसर्च के साथ–साथ शास्त्रीय नाटकों से जोड़कर तुलनात्मक अध्ययन हेतु तैयार किया जा सकता है। इसका प्रतिफल होगा कि– नाटक समाजिक बदलाव में किस प्रकार भूमिका अदा करते हैं, इससे विद्यार्थियों का अवगत करा कर नाटक के प्रति रूझान पैदा करना। नाटक सामाजिक समस्याओं को लेकर छात्रों द्वारा मंचन करके आम जनता को जागृत करने का सशक्त माध्यम है। यह सभी कलाओं की तरह विद्यार्थियों को नए तरीके से संवाद करने और समझाने का सरल माध्यम है।

लोक साहित्य कोड HIND-305

इकाई 1– लोक साहित्य परिभाषा एवं स्वरूप, लोक साहित्य के विशिष्ट अध्येता, लोक संस्कृति अवधारणा, लोक संस्कृति और साहित्य

लोक साहित्य के प्रमुख रूप– लोकगीत, लोक नाट्य, लोक कथा, लोक गाथा

इकाई 2– लोक गीत– संस्कार गीत, व्रत गीत, श्रम परिहार गीत, ऋतु–गीत, लोक नाट्य– रामलीला, स्वांग, यक्षगान, तमाशा, नौटंकी, जात्रा और कथकली

इकाई 3– लोक कथा– ब्रतकथा, परीकथा, नागकथा, बोधगाथा, कथा नकरूढ़ियां एवं अभिप्राय, लोककथा निर्माण में लोकगाथा, लोकगाथा की भारतीय परम्परा, लोकगाथा की सामान्य प्रवृत्तियां, लोकगाथा प्रस्तुति

इकाई 4– प्रसिद्ध लोक गाथाएं– भरथरी, गूगा गाथा, गढ़ मलौण, मदना की हार, मोहणा, नूरपुर का राजा जगत सिंह, सुन्नी–भुंकू, कुंजू–चंचलो, रानी सुनैना

लक्ष्य– लोक साहित्य की रचना जनता–जनार्दन द्वारा की जाती है। जन समूह की भावनाएं जैसे हर्ष, विषाद, भय, प्रेम, दया, करुणा आदि की सामूहिक अभिव्यक्ति गीत, व्यथा आदि के रूप में होती है। आज लुप्तप्रायः लोक साहित्य

की विभिन्न विधाओं से विद्यार्थियों को अवगत कराना और लोक–साहित्य अध्ययन के लिए जागरूक करना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

प्रतिफल एवं परियोजना का समन्वय : एक क्षेत्र की संस्कृति से दूसरे क्षेत्र की संस्कृति की भिन्नता और समानता का अध्ययन कर तुलनात्मक अध्ययन हेतु विद्यार्थियों को तैयार करना। लोक–साहित्य के महत्त्व के बारे में जागरूक करना तथा लोकगीतों, लोक कथाओं, लोकोक्तियों को संग्रहित करने के लिए विद्यार्थियों को तैयार करना भी पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।

बी.ए. तृतीय वर्ष

छायावादोत्तर हिंदी कविता– Code HIND-306

इकाई 1– सचिदानंद हीरानंद वात्स्यायन तथा मुक्तिबोध का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय

अज्ञेय : कलगी बाजरे की, यह दीप अकेला

मुक्तिबोध – भूल गलती, एक रंग का राग

इकाई 2– नागार्जुन तथा शमशेर बहादुर सिंह : व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय

नागार्जुन – अकाल और उसके बाद, कालिदास

शमशेर बहादुर सिंह– सूना–सूना पथ है, उदास झरना, वह संलोना जिस्म

इकाई 3– भवानी प्रसाद मिश्र– कहीं नहीं बचे, गीत फरोश

कुंवर नारायण– नचिकेता

इकाई 4 – सर्वेश्वर दयाल सक्सेना तथा केदारनाथ सिंह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व : सामान्य परिचय

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना– मैंने कब कहा, हम लोग चलेंगे

केदार नाथ सिंह– रचना की आधी रात, फर्क नहीं पड़ता

लक्ष्य – 'छायावादोत्तर हिंदी कविता' में आधुनिक कविता के विविध वाद एवं विचारधाराओं का समावेश है। आधुनिक हिंदी काव्य का सामान्य जन से सरोकार रहा, इसलिए इस युग की कविता मानव अस्तित्व की गरिमा का बोध कराती है। छायावादोत्तर कवियों ने समाज में व्याप्त कुरीतियों में सुधार करने के प्रयास किए।

प्रतिफल एवं परियोजना का समन्वय : प्रगतिवादी कविता में मानव जीवन में व्याप्त आर्थिक विषमताओं का चित्रण देखने को मिलता है। आजादी के बाद समूचे राष्ट्र में रचनात्मक अभिव्यक्तियां अपनी चेतना और व्यवहार में बिना किसी वाद का सहारा लिए व्यवस्था को चुनौती दे कर आम जनता के अधिकारों की मांग करती दिखाई पड़ती हैं। इन कविताओं का अध्ययन कर विद्यार्थियों (पाठकों) को आम जनता के अधिकारों को नए सिरे से परिभाषित करने की प्रक्रिया शुरू करने में सहायता मिल सकती है। निश्चिय ही समय के अनुरूप छायावादोत्तर हिंदी कविता निरंतर गतिमान है।